सफलता की कहानी

श्री जितेन्द्र बहादुर सिंह

ग्राम – खानपुर
ब्लाक – सकरन
तहसील – बिसवॉ
जनपद – सीतापुर।

केले की खेती से आर्थिक समृद्धि की ओर मजबूत कदम

मैं जितेन्द्र बहादुर सिंह पुत्र श्री शिवबक्श सिंह ग्राम– खानपुर, ब्लाक–सकरन तहसील– बिसवॉ जनपद सीतापुर मो0 नं0– 9919835331 का निवासी हूॅ। यद्यपि विगत वर्षों में मैं औद्यानिक फसल केला की खेती के पहले पारम्परिक रूप से 4हे0 में गन्ना, गेंहूॅ, धान की खेती करता था, जिसमें लागत लगभग 4.0लाख रू0 के आस–पास व्यय होता था। उत्पादन के उपरान्त इन फसलों को विक्रय कर लगभग 10. 50लाख रू0 प्राप्त हुए थे। लागत कम करने के उपरान्त 6.50लाख रू0 ही बचत प्राप्त होती थी। उद्यान विभाग के सम्पर्क में आने के बाद औद्यानिक खेती के अन्तर्गत वर्ष 2016–17 में केला टिशूकल्चर जी–9, 4हे0 में डी0बी0टी0 पद्धति पर विभाग से अनुदान प्राप्त कर केला की खेती की, जिस पर लगभग 10.0लाख रू0 व्यय हुआ। फसल उत्पादन के उपरान्त बिक्री करने पर लगभग 25.0 लाख रू0 प्राप्त हुए। लागत घटाने के उपरान्त 15.0 लाख रू0 शुद्ध लाभ के रूप में प्राप्त हुए साथ ही डी0बी0टी0 पद्धति पर विभाग द्वारा 30738/–रू0 प्रति हे0 के हिसाब से कुल रू0122952/–अनुदान के रूप में आर0टी0जी0एस0 द्वारा खाते में प्राप्त हुए। इस प्रकार कुल रू0 1622952/– की बचत हुई। पारम्परिक खेती से लगभग 972952/–रू0 अधिक लाभ प्राप्त हुआ। इसके अतिरिक्त उपरोक्त 4हे0 केला का रेट्यून फसल हेतु वर्ष 2017–18 में रू0 40988/– अनुदान के रूप में आर0टी0जी0एस0 द्वारा खाते में प्राप्त हुए। रेट्यून केला फसल का उत्पादन वर्ष 2018–19 के प्रारम्भिक वर्षा काल में बाजार में विक्रय हेतु जायेगा जिसमें अच्छी आमदनी आने का भरोसा है। इस प्रकार पारम्परिक खेती से हटकर औद्यानिक खेती से मेरे जीवन में आर्थिक समृद्धि हुई है । उक्त फसल के अतिरिक्त 0.1हे0 में केसर की खेती किया था, जिसमें 25000/–रू0 लागत आयी है। उत्पादन के रू0 में 3.5कि0ग्रा0 केसर प्राप्त हुआ है जिसे विक्रय किया जाना है साथ ही एक एकड़ जमीन पर मार्च,2018 में एपल बेर भी लगा लिया है, जिस पर फूल आना प्रारम्भ हो गया है। इस प्रकार औद्यानिक खेती से कृषको ं के जीवन में मा0 प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के सपने के अनुसार किसानों की आय दो गुनी किया जाना है जो साकार प्रतीत होती दिख रही है।

सफलता की कहानी

श्रीमती मुन्नी देवी

ग्राम – खानपुर
ब्लाक – सकरन
तहसील – बिसवॉ
जनपद – सीतापुर।

केले की खेती से आर्थिक समृद्धि की ओर मजबूत कदम

मैं मुन्नी देवी पत्नी श्री मनोहर सिंह ग्राम– खानपुर, ब्लाक– सकरन तहसील–बिसवॉ जनपद सीतापुर की निवासी हूॅ। यद्यपि विगत वर्षों में मैं औद्यानिक फसल केला की खेती के पहले पारम्परिक रूप से 2हे0 में गेंहूॅ, धान, गन्ना की खेती करती थी, जिसमें लागत लगभग 1.90लाख रू0 के आस–पास व्यय होता था। उत्पादन के उपरान्त इन फसलों को विक्रय कर लगभग 5.00लाख रू0 प्राप्त हुए थे। लागत कम करने के उपरान्त 3. 10लाख रू0 ही बचत प्राप्त होती थी। जिला उद्यान अधिकारी,सीतापुर के सम्पर्क में आने के बाद औद्यानिक खेती के अन्तर्गत वर्ष 2016–17 में 2हे0 में डी0बी0टी0 पद्धति से केला टिशूकल्चर जी–9, की खेती की, जिस पर लगभग 4.75लाख रू0 व्यय हुआ। फसल उत्पादन के उपरान्त वर्ष 2017–18 के प्रारम्भ में बिक्री करने पर लगभग 12.20 लाख रू0 प्राप्त हुए। लागत घटाने के उपरान्त 7.45 लाख रू0 शुद्ध लाभ के रूप में प्राप्त हुए साथ ही डी0बी0टी0 पद्धति पर उद्यान विभाग द्वारा 30738/–रू0 प्रति हे0 के हिसाब से कुल रू0 61476/–अनुदान के रूप में आर0टी0जी0एस0 द्वारा खाते में प्राप्त हुए। इस प्रकार कुल रू0 806476/– की बचत हुई। पारम्परिक खेती की अपेक्षा लगभग 496476/–रू0 अधिक लाभ प्राप्त हुआ। इसके अतिरिक्त उपरोक्त 2हे0 केला का रेट्यून फसल हेतु वर्ष 2017–18 में रू0 20494/– अनुदान के रूप में आर0टी0जी0एस0 द्वारा खाते में प्राप्त हुए। रेट्यून केला फसल का उत्पादन वर्तमान वर्ष 2018–19 के प्रारम्भिक वर्षा काल में बाजार में विक्रय हेतु जायेगा जिसमें अच्छी आमदनी आने की सम्भावना है। इस प्रकार पारम्परिक खेती से हटकर औद्यानिक खेती से मेरे जीवन में आर्थिक समृद्धि हुई है । इस प्रकार जिला उद्यान अधिकारी के सम्पर्क आने के उपरान्त औद्यानिक खेती केला जी–9 टिशूकल्चर से मेरे जीवन में मा0 प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के किसानों की आय दो गुनी किये जाने संबंधी सपना साकार प्रतीत होता दिख रहा है।

सफलता की कहानी

श्री अबरार

ग्राम	–	कोड़वाधमधमपुर
ब्लाक	–	रेउसा
तहसील	–	बिसवॉ
जनपद	–	सीतापुर।

केले की खेती से आर्थिक समृद्धि की ओर मजबूत कदम

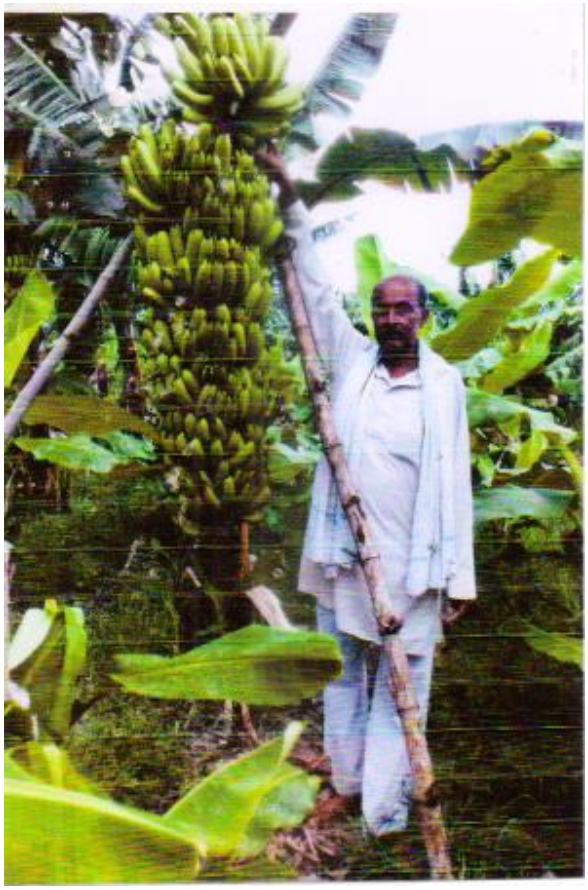

मैं अबरार पुत्र श्री अजीज ग्राम– कोड़वा धमधमपुर, ब्लाक–रेउसा तहसील–बिसवॉ जनपद सीतापुर मो0 नं0– 9198857211 का निवासी हूॅ। यद्यपि विगत वर्षों में मैं औद्यानिक फसल केला की खेती के पहले पारम्परिक रूप से 1.88हे0 में धान, गन्ना, गेंहूॅ की खेती करता था, जिसमें लगभग 1.75 लाख रू0 के आस– पास व्यय होता था। उत्पादन उपरान्त इन फसलों को बाजार में विक्रय करने से लगभग 4.80 लाख रू0 प्राप्त हुए थे। लागत कम करने के उपरान्त 3.05लाख रू0 ही बचत प्राप्त होती थी। उद्यान विभाग के सम्पर्क में आने के बाद दिये गये तकनीकी ज्ञान के आधार पर औद्यानिक खेती के अन्तर्गत वर्ष 2016–17 में जी–9 केला टिशूकल्चर 1.88हे0 में डी0बी0टी0 पैटर्न पर विभाग से अनुदान पर केला की खेती की, जिस पर लगभग 4.70लाख रू0 व्यय हुआ। फसल उत्पादन के उपरान्त बिक्री करने पर लगभग 11.90 लाख रू0 प्राप्त हुए। लागत घटाने के उपरान्त 7.20 लाख रू0 शुद्ध लाभ के रूप में प्राप्त हुए साथ ही डी0बी0टी0 पद्धति पर विभाग द्वारा 30738/–रू0 प्रति हे0 के हिसाब से कुल रू057787/–अनुदान के रूप में आर0टी0जी0 एस0 द्वारा खाते में प्राप्त हुए। इस प्रकार कुल रू0 777787/– की बचत हुई। पारम्परिक खेती से लगभग 472787/–रू0 अधिक लाभ प्राप्त हुआ। इसके अतिरिक्त उपरोक्त 1.88हे0 केला का रेट्यून फसल हेतु वर्ष 2017–18 में रू0 19264/– अनुदान के रूप में आर0टी0जी0एस0 द्वारा खाते में प्राप्त हुए। रेट्यून केला फसल का उत्पादन वर्ष 2018–19 के प्रारम्भिक वर्षा काल में बाजार में विक्रय हेतु जायेगा अच्छी आय प्राप्त होने का भरोसा है। इस प्रकार पारम्परिक खेती से हटकर औद्यानिक खेती से मेरे जीवन में उतरोत्तर आर्थिक समृद्धि हुई है इस प्रकार उद्यान विभाग के सम्पर्क में आने के बाद अपनायी गयी औद्यानिकी खेती से मेरे जीवन में आर्थिक समृद्धि मा0 प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के सपने के अनुसार किसानों की आय दो गुनी किया जाना साकार प्रतीत होती दिख रही है।

सफलता की कहानी

श्री वीरेन्द्र सिंह

ग्राम	–	पाल्हापुर
ब्लाक	–	रामपुरमथुरा
तहसील	–	महमूदाबाद
जनपद	–	सीतापुर।

पाली हाउस के अन्तर्गत जरबेरा की खेती से आर्थिक समृद्धि की ओर मजबूत कदम

मैं वीरेन्द्र सिंह पुत्र श्री रामपाल सिंह ग्राम–पाल्हापुर, ब्लाक–रामपुरमथुरा तहसील– महमूदाबाद जनपद सीतापुर मो0 नं0–9450382253 का निवासी हूॅ। यद्यपि मैं औद्यानिक फसलों की खेती पिछले 5 वर्षों से कर रहा हूॅ किन्तु एकीकृत बागवानी विकास मिशन योजनान्तर्गत जरबेरा फूल की खेती की तरफ हमारा झुकाव उद्यान विभाग की प्राप्त जानकारी से वित्तीय वर्ष 2016–17 में हुआ जिसके परिणामस्वरूप 1000वर्गमी0 क्षेत्रफल में पालीहाउस तैयार कर जरबेरा फूल की खेती तैयार किया। पाली हाउस बनाने एवं प्लान्टिंग मैटेरियल पर व्यय कुल रू014,35,000/– हुआ। उद्यान विभाग द्वारा उक्त कार्यक्रम पर मुझे रू05,92,500/– अनुदान के रूप में प्रदान किया गया। माहः नवम्बर,2016 से जरबेरा फूल का उत्पादन बाजार में बिक्री हेतु जा रहा है। दिनॉक 30सितम्बर,2017 तक लगभग रू012,50,000/– का शुद्ध लाभ प्राप्त हो चुका है। इस प्रकार मार्च,2018 तक पाली हाउस की पूर्ण लागत निकल चुकी है। इससे प्रेरित होकर वर्ष 2018–19 में जरबेरा फूल के साथ–साथ ग्लेडियोलस फूल की खेती भी करूॅगा।

सफलता की कहानी

मैं निमित कुमार सिंह पुत्र श्री कृपा निधान सिंह (मो0नं0– 09565556222) ग्राम खदनिया ब्लाक परसेण्डी तहसील सीतापुर का कृषक हूँ। मैंने लखनऊ विश्वविद्यालय से अपनी मैनेजमेन्ट की पढाई करते हुए मधुमक्खी पालन के जरिये सफलता हासिल किया उद्यान विभाग के जिला उद्यान अधिकारी **विनय कुमार यादव** मिशन प्रभारी **श्री घनश्याम सिंह** के संपर्क परिणाम स्वरूप मधुमक्खी पालन को और आगे बढाने के लिए **एकीकृत बागवानी मिशन** के तहत वर्ष 2015–16 में उद्यान विभाग के सहयोग से **50** मौनालय प्राप्त किया जिससे कुल उत्पादन **1** टन किया और मधुमक्खी के अन्य उत्पाद पे भी काम किया जैसे मोम, पराग, परपोलिस का भी उत्पादन किया जिससे की कुल आय **3** लाख रूपये प्राप्त हुई साथ ही इन्होने अपने मौनालय की संख्या में वृद्धि की **1200** तक जिससे की अतिरिक्त उत्पादन **40** टन का किया और कुल आय **40** लाख की हुई साथ ही साथ अन्य प्रदेश में भी काम किया जिससे की अन्य प्रकार के शहद प्राप्त हो सके जैसे कि लीची के लिए बिहार, सरसों के शहद के लिए राजस्थान जंगली फूलों के शहद के लिए पश्चिम बंगाल भविष्य में मेरे द्वारा और मौनालय बढाने की योजना है ताकि मधुमक्खी के परागत क्रिया से लाभ हो सके और किसान को अपने साथ मधुमक्खी पालन करने के लिए बढावा दिया। ताकि मधुमक्खियों का बचाव किया जा सकें।

सफलता की कहानी

मैं शेर सिंह पुत्र श्री बुद्धा ग्राम बिजौली ब्लाक एवं तहसील मिश्रिख का एक साधारण किसान हूॅ। मैंने हाईस्कूल की पढाई करके गॉव में गेंहूॅ, धान की सामान्य खेती करता था जिसके उत्पादन से परिवार की जीवनचर्या पूरे वर्ष कठिन परिस्थितियों में व्यतीत होती थी। जिला उद्यान अधिकारी उद्यान विभाग के सम्पर्क में आने के बाद मधुमक्खी पालन करने हेतु एवं अपनी आय को दो गुने से अधिक प्राप्त करने के बारे में जानकारी प्राप्त हुई। तत्पश्चात् मेरे द्वारा डी0बी0टी0 पैटर्न पर पंजीकरण विभाग में कराया। प्रथम आवक–प्रथम पावक के आधार पर जिला उद्यान अधिकारी द्वारा विभागीय नियमों के अनुसार 50बक्सों के सेट पर रू0 88000/– का अनुदान देने की बात कही गयी। मेरे द्वारा 50बक्सों का सेट लगभग रू02,20,000/–में क्रय कर मधुमक्खी पालन का कार्य प्रारम्भ किया, जिस पर विभाग द्वारा आर.टी.जी.एस. के माध्यम से खाते में रू088000/–का अनुदान सत्यापनोपरान्त दिया गया। मधुमक्खी पालन में उपरोक्त लागत के अलावा पर्यावरण में फ्लोरा नहीं होने पर मक्खियों को चीनी का घोल बनाकर भोजन के रूप में दिया जाता है। वर्ष के अधिकांश समय में कहीं न कहीं समय–समय पर फ्लोरा मिलता ही रहता है जो माइग्रेसन के माध्यम से मौन बक्सों को एक स्थान से दूसरे स्थान तक ले जाकर रखा जाता है। वर्तमान वर्ष 2017–18 से लेकर मई,2018 तक मुझे प्रति बक्से लगभग 6000/–रू0 की दर कुल 3.0लाख रू0 आय शहद से प्राप्त हो चुकी है जो उक्त पारम्परिक खेती के सापेक्ष बहुत लाभदायक एवं आर्थिक वृद्धि में मददगार सिद्ध हो रही है। उक्त कार्य में तकनीकी सहयोग एवं सफलता हेतु मैं उद्यान विभाग की सराहना करता हूॅ कि मेरे जैसे साधारण किसानों की मदद कर आर्थिक समृद्धि की आर ले जाने में अपना पूर्ण सहयाग प्रदान करते रहें।

सफलता की कहानी

मैं नवेन्द्र सिंह पुत्र श्री यदुनन्दन सिंह, (मो0नं0–09651515516) निवासी ग्राम– बीहटबीरम् वि0ख0–मछरेहटा जिला– सीतापुर का एक प्रगतिशील कृषक हूँ। मैंने लखनऊ विश्वविद्यालय से एम0बी0 ए0 की डिग्री वर्ष 2000 में प्राप्त करने के पश्चात् दो वर्षों तक मोहन मीकिन्स कं0 में सेल्स मैनेजर पद कार्य किया है साथ ही साथ मुझे खेती करने का पैतृक शौक था, जिसके कारण सेल्स मैनेजर की नौकरी को छोड़कर खेती करना शुरू किया। मैंने 2002 में सर्वप्रथम सीतापुर में फूलों की खेती (ग्लेडियोलस एवं रजनीगन्धा) प्रारम्भ किया। तत्पश्चात् मै क्रमशः क्षेत्र विस्तार करता रहा। वर्ष 2013–14 में उद्यान विभाग के प्रचार–प्रसार मोटीवेशन एवं सहयोग से फूलों के प्रोजेक्ट बेस्ड कल्टीवेशन की तरफ ध्यान गया, जिसके परिणाम स्वरूप 1000वर्गमी0 में उद्यान विभाग के सहयोग से पाली हाउस का निर्माण किया जिसमें जरबेरा की खेती की जा रही है। इससे लगभग 7से 8लाख रू0 की आय प्रति वर्ष हो रही है। इसके अतिरिक्त वर्तमान में लगभग 8एकड़ में ग्लेडियोलस एवं 2एकड़ में गुलाब की खेती कर रहा हूँ। वर्ष 2016–17 में उद्यान विभाग द्वारा 1हे0 क्षे0 में ग्लेडियोलस खेती करने के लिए मुझे डी.बी.टी. पैटर्न पर अनुदान धनराशि मेरे बैंक खाते में प्रदान की गयी थी जो पूर्ववत् खेती के साथ लाभ के रूप में अतिरिक्त प्राप्ति हुई तथा लगभग 16 से 18लाख रू0 प्रतिवर्ष लाभ के रूप में प्राप्त हो रहा है साथ ही 3000वर्गमी0 में पाली हाउस के निर्माण हेतु उद्यान विभाग से प्रोजेक्ट तैयार कर आवेदन करूँगा जिसमें जरबेरा फूल की खेती अधिक क्षेत्रफल में की जा सके।